Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material For B.A. Part III

SANSKRIT

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Deptt. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

Date
28.05.2020
Thursday
Paper VII

Topic: शब्द शक्तियों के स्वरूप का वर्णन (लक्षणा का शेष भाग एवं व्यञ्जना)

लक्षण लक्षणा :

परार्थमात्रबोधे तु भवेल्लक्षणलक्षणा ॥6॥

जो लक्षणा वाक्य के अन्वय बोध के लिए स्वार्थ का परित्याग करके भी परार्थ का बोध कराती है, वह लक्षण लक्षणा कही जाती है। इस लक्षणा में दूसरे अर्थ का बोध करा देने के बाद मुख्यार्थ का अपना कोई सम्बन्ध नहीं रहता। इस प्रकार अपने स्वार्थ का सर्वथा परित्याग करके अर्थबोधन कराने वाली लक्षण-लक्षणा जहत्स्वार्था भी कही जाती है, क्योंकि वह अपने अर्थ का भी अन्वयबोध कराती है। जैसे!

उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते? सुजनता प्रथिता भवता परम् ।
विदधदीदृशमेव सदा सखे सुखितमास्स्व ततः शरदां शतम् ॥

इस पद्य में उपकारादि शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़कर अन्वयार्थ अपकारादि अर्थों में परिणत हो गये हैं।

→

व्यञ्जना शक्ति

अभिधा और लक्षणा शक्ति के अतिरिक्त शब्दों में एक तीसरी शक्ति भी होती है जिसका नाम व्यञ्जना है। इस व्यञ्जना वृत्ति से अर्थबोधक शब्द व्यञ्जक तथा उससे बोध्य अर्थ व्यंग्य कहा जाता है।

विरतास्वभिधाऽऽद्यासु ययाऽर्थो बोध्यतेऽपरः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च ॥ ९ ॥
(विश्वनाथ)

अभिधा और लक्षणा नामक शब्दशक्तियों के विरत (अपना अपना अर्थ बताकर) क्षीण हो जाने पर जिससे अन्य- तीसरे अर्थ का बोध होता है, वह वृत्ति व्यञ्जना कही जाती है।

व्यञ्जना शक्ति शब्दनिष्ठ और अर्थनिष्ठ भी होती है। शब्द की तरह अर्थ भी अर्थान्तर का व्यञ्जक होता है, इसलिए शाब्दी व्यञ्जना और आर्थी व्यञ्जना नाम के व्यञ्जना के दो प्रामाणिक भेद हुए। शाब्दी- व्यञ्जना भी दो प्रकार की होती है — एक अभिधा- मूला और दूसरी लक्षणामूला।

अभिधामूला व्यञ्जना:

अनेकार्थस्य शब्दस्य संयोगाद्यैर्नियन्त्रिते।
एकार्थेऽन्यार्थधीहेतुर्व्यञ्जना साऽभिधाऽऽश्रया ॥ १० ॥
(विश्वनाथ)

क्रमशः →

Scanned by CamScanner